

रूपं सर्वभूतानि — पक्कद्रुममिवासाद्य तस्य जीवितमर्थवत् MBh. 5, 4586.   
 झाजीवन् *benutzend* JĀĀ. 2, 67. (धेनुः) झाजीव्यमाना जगतो सात्तया नाप-   
 चीयते MĀR. P. 29, 8. — Vgl. झाजीव fgg.

— उद् *wieder aufleben*: उद्जीवत् BHĀṬṬ. 17, 95. कश्चिन्मर्त्यो मृतो रा-   
 ज्ञन्युनरुञ्जीवितो ऽभवत् MBh. 12, 5675. 14, 2392. — *caus. beleben*: वीर्यं   
 संधुतयती = पुनरुञ्जीवयती MALLIN. zu KUMĀRAS. 3, 52. — Vgl. उञ्जी-   
 विन्.

— अण्युद् *als Haupt, als Beschützer Anderer leben*: स्वबाहुबलमा-   
 श्रित्य यो ऽभ्युञ्जीवति मानवः । स लोके लभते कीर्तिं परत्र च शुभा गति-   
 म् ॥ MBh. 5, 4538.

— प्रत्युद् *wieder aufleben* KATHĀS. 4, 101. तेन प्रत्युञ्जिजीव सा 10,   
 97. 14, 81. — *caus. wieder aufleben machen* PANĀT. 244, 2. — Vgl. प्र-   
 त्युञ्जीवन.

— उप 1) *leben von, bestehen durch, erhalten werden von, Nutzen ziehen aus*; mit dem acc.: श्रयो च खलु वा श्रोषधीनां च रसमुपजीवामः TS. 2, 1, 9, 2. पशून् 7, 3, 5, 1. 6, 5, 2, 5. उर्जम् 5, 4, 3, 3. 6, 2, 10, 9. इतः प्रदानमुपजीवति देवाः 3, 2, 9, 7. TBr. 2, 2, 7, 3. AV. 8, 10, 22. fgg. 10, 6, 32. 18, 4, 32. ÇĀT. Br. 2, 2, 2, 3. 3, 4, 10. 4, 3, 2. 7, 5, 3, 34. पूर्ववपसे पुत्राः पितरमुपजीवति, उत्तरवपसे पुत्रान्पिता 12, 2, 2, 1. तस्यै द्वौ स्तनौ देवा उपजीवति 14, 8, 9, 1. पौदो TS. 7, 1, 1, 6. KAUC. 68. ये त्वा देवोन्निकं मन्यमानाः पापा भद्रमुपजीवति पद्माः RV. 4, 190, 5. — शेषास्तम् (व्येष्टम्) उपजीवियु-   
 र्यथैव पितरं तथा M. 9, 105. परन्त्यमिव भूतानि मरुद्रुममिव द्विजाः ॥ बान्ध-   
 वास्त्वोपजीवतु मरुत्सनामिवामारः । MBh. 2, 1624. fg. 3, 15093. 11466. 4, 2283. 7, 1064. 3422. 13, 288. 1811. R. 2, 36, 4. PANĀT. 207, 16. उपजीवति शक्त्या हि जलज्ञा जलज्ञानिव 1, 173. उपजीव्य गुरुं द्रोणं शक्रे वैश्रवणाम् u. s. w. कथमेतान् योधये *leben von so v. a. dienen* MBh. 4, 1433. मनु-   
 प्याशोपजीवति यस्य शिल्पम् 1, 2594. 13, 4277. स्वकर्म 3108. बाण्ड्यम् 4261. स्वं समुत्थानम् 3, 1208. तो सिद्धिमुपजीवति कर्मज्ञामिद् जत्तवः 1229. ÇĪC. 9, 32. विक्रमोच्छिष्टम् BHĀG. P. 4, 21, 10. स्त्रीधनानि तु ये मोहाडुपजी-   
 वति बान्धवाः । नारीयानानि वस्त्रं वा Nutzen ziehen aus, gebrauchen 3, 52. उपजीव्य धनं मुञ्चन् (गारम्) JĀĀ. 2, 301. mit dem gen. (!): येषां वयं दातारो ये चास्माकमुपजीवति KAUC. 88. pass.: मुञ्चिर्वं नित्यशस्तस्य यः परैरुपजीव्यते । राम तस्य तु दुर्जिर्वं यः परानुपजीवति ॥ R. 2, 105, 5. वयो-   
 भिः कृमिकीटैश्च नर एवोपजीव्यते MĀR. P. 26, 32. तदेतद्गारतं नाम क-   
 विभिस्तूपजीव्यते । उदयप्रेप्सुभिर्भृत्यैर्भिजात इवेश्वरः ॥ MBh. 4, 308. (श्रीः)   
 भवद्विश्रापजीविता 18, 137. — 2) *leben von, für so v. a. betreiben, üben*:   
 न तदा ब्राह्मणः कश्चित्स्वधर्ममुपजीवति MBh. 3, 12840. धर्मं पुराणमुपजी-   
 वति 8, 2086. ते सम्यगुपजीवियुः षट्पूर्णाणि (अध्यापनम्, अध्ययनम्, यजनम्,   
 याजनम्, दानम्, प्रतिग्रहम्) M. 10, 74. अलिङ्गी लिङ्गवेषेण यो वृत्तिमुपजी-   
 वति MBh. 4, 200. नोपजीवेत जीविकाम् BHĀG. P. 7, 13, 7. तथा क्षुस्यात्थि-   
 ता बुद्धिर्मानुष्यमुपजीवितुम् *als Mensch zu leben* HARIV. 4383. — Vgl. उ-   
 पजीवक fgg.

— वि *aufleben, in's Leben zurückkehren*: द्विजप्रभावात् — व्यजीवत्स   
 वनस्पतिः MBh. 1, 2002.

— सम् 1) *zusammen leben*: मया पत्या सं जीव शरदः शतम् AV. 14, 1, 52.   
 — 2) *leben*: यस्यै नित्यमप्यो धृतं प्रजाः संजीवन्तीः पिबन्ति TS. 1, 7, 2, 4. AV.   
 19, 69, 3. संजीव शरदः शतम् MBh. 3, 3054. संजीव्य कालमिष्टं च सशरीरो   
 दिवं गतः 14, 103. BHĀG. P. 4, 21, 47. *leben von* (instr.): कथं स्वद्वैद्ध्यधर्मण

III. Theil.

संजीवद्वाङ्मणो न वा MBh. 12, 2917. — 3) *zum Leben zurückkehren, wieder lebendig werden* ÇĀT. Br. 3, 8, 2, 27. 9, 4, 2. 17. MBh. 14, 1978. med.: प्रा-   
 षांस्त्यह्यामि गोविन्द नायं संजीवते यदा 2001. DRAUP. 9, 4. — *caus. beleben*:   
 संजीविका नाम स्थ ता इमममुं संजीवयत् ĀÇV. ÇĀ. 6, 9. एवं सः — सर्वम् —   
 संजीवयति M. 1, 57. मृतांस्तान्समजीवयत् MBh. 3, 15027. 14, 1979. RĪGĀ-   
 TAR. 2, 94. संजीवित MBh. 14, 2890. प्रियमाणान्संजीवयितुम् R. 4, 51, 20.   
 वृत्तम् MBh. 1, 1773. fg. आविन्नितम् — वाचा संजीवयन्निव 14, 186. तिप्रे सं-   
 जीवय च पार्थिवम् 3, 277. 10818. कीर्तिर्हि पुरुषं लोके संजीवयति मातृव-   
 त् 16950. उद्गातृचेतनाम् । सीता मापेति शंसती त्रिजटा समजीवयत् RAON.   
 12, 74. मम वाचमिमं प्रसुती संजीवयति BHĀG. P. 4, 9, 6. Jmd am Leben   
 erhalten, ernähren: क्रोतानः स दिवारान् प्राणिनः समजीवयत् RĪGĀ-   
 2, 28. — Vgl. संजीवन, संजिजीवयिषु.

— प्रतिस्म *aufleben*: वातातपक्त्वात्तमिवाप्रधृष्य वर्षेण वीर्यं प्रतिसंजि-   
 जीविते R. 5, 28, 16.

जीर्व (von जीव्) 1) adj. *lebendig*; subst. m. n. der —, *das Lebendige, ein lebendes Wesen* TRIK. 3, 3, 414. H. 1366. an. 2, 521. MED. v. 8. निरै-   
 तु जीवो अर्जतो जीवो जीर्वत्या अर्धि RV. 5, 78, 9. जीवो व्यतिरशीमहि 7,   
 32, 26. अमुं 1, 113, 16. 140, 8. 164, 30. 2, 28, 8. 5, 44, 5. ÇĀT. Br. 4, 1, 2, 2.   
 13, 8, 4, 9. 4, 12. आत्मन् KATHOP. 4, 5. KHĀND. Up. 6, 3, 2. 11, 1. इमे जीवा   
 वि मृतराववृत्रन् RV. 10, 18, 3. 57, 5. VS. 19, 46. AV. 1, 35, 2. 6, 46, 1. 12,   
 2, 45. 18, 2, 32. जीवानां लोकः 2, 9, 1. विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती RV. 4,   
 92, 9. 113, 8. 10, 107, 1. नमो वः पितरो जीवायं *dem was an euch leben-   
 dig ist* VS. 2, 32. एतद्दे वनस्पतीनामनार्तं जीवं यदार्द्रम् *das ist lebendig an   
 den Bäumen was saftig ist* ÇĀT. Br. 9, 2, 2, 3. 1, 3, 4, 1. जीवं वै देवानां   
 कृविरमृतममृतानाम् 2, 1, 20. — मृते वा वयि जीवि वा MBh. 12, 10634. तस्मा-   
 त्सर्पं लुब्धकं मुञ्च जीवम् 13, 31. यद्येतेन्यो मुच्यसे ऽरिष्टेदकः पुनर्नन्म प्रा-   
 प्यसे जीव एव DRAUP. 7, 20. धान्यवीजानि धान्याङ्गुलान्दिनानि — सर्वा-   
 एयेतानि जीवानि MBh. 3, 13826. जीवा हि बहवः — वृत्तेषु च फलेषु च ।   
 उदके बहवश्चापि 13828. कर्षतो लाङ्गलैः पुंसो (nom. pl.) व्रति भूमिशया-   
 न्वहन् । जीवान् 13825. जीवो जीवस्य जीवनं BHĀG. P. 1, 13, 44. जीवाः श्रे-   
 ष्ठा क्षुजिवानां ततः प्राणभूतः 3, 29, 28. अरण्यं m. *ein im Walde leben-   
 des Thier* PANĀT. 193, 23. mit *caus. Bed. leben machend, erzeugend* in   
 पुत्रजीव. जीवजल *lebenbringendes Wasser* BHĀG. P. 9, 21, 12. — 2) m. *das   
 Lebensprincip, die individuelle Seele* TRIK. 4, 1, 113. H. 1366. Sch. वाला-   
 यशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च । भागो जीवः स विज्ञेयः स चानत्याय   
 कल्पते ÇVETĀÇV. Up. 5, 9. KHĀND. Up. 6, 11, 2. fg. PRAÇNOP. 5, 5. जीवसंसो   
 ऽत्तरात्मान्यः मरुजः सर्वदेहिनाम् । येन वेद्यते सर्वं सुखं दुःखं च जन्ममु ॥   
 M. 12, 12, 22. 23. 53. JĀĀ. 3, 131. अयं कर्तृत्वभक्त्यामिमानिबेन इक्षुलोक-   
 परलोकगामी व्यावहारिको जीव इत्युच्यते VEDĀNTAS. (Allah.) No. 50.   
 BĀLAB. 16. KAP. 1, 98. BĪDAR. 1, 31. TARE SAṂGH. 54. जीवं पश्यामि वृत्ता-   
 णामचैतन्यं न विद्यते MBh. 12, 6837. कालसंचोदिता जीवा मञ्जति नरके   
 ऽवशाः 10006. 10008. fg. 13, 5422. 5430. fgg. 14, 469. fg. 503. BHĀG. P.   
 1, 3, 32. 7, 5. 10, 22. 3, 12, 46. 31, 43. 44. 7, 14, 36. 37. जीवकोश 4, 22, 26.   
 23, 11. PRAB. 56, 5. एवं पूर्वमिदं काव्यं मुनिभिः प्रतिपूजितम् । जीवभूतं म-   
 नुष्याणां कवीनामुपजीवनम् R. 4, 4, 23. — 3) m. n. *das Leben* AK. 2, 8.   
 2, 88. TRIK. 3, 3, 414. H. 1367. H. an. MED. °पर्याया MBh. 4, 1644. 6.   
 1908. यथा जीवं लभाम्यर्कम् HARIV. 9972. लक्ष्मणानि हि जीवानि सर्वेषां नः   
 R. 5, 3, 74. जीवाशा AMAR. 90. BHĀG. P. 1, 2, 10. °त्याग PRAB. 69, 5. ŚĀN.